Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 10, Issue 01, January-June 2023
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2023

तंजौर के राजवंशों का नृत्य के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान

DR. SMRUTI VAGHELA

Assistant Professor, Department of Dance, Maharaja Sayajirao University of Baroda

सार

नृत्य सबसे पुराने, सबसे व्यापक और लोकतांत्रिक कला रूपों में से एक है। प्राचीन काल से, मानव जाति के कई अवसर एक विशाल नृत्य प्रदर्शन के साथ होते हैं। प्राचीन काल में, नृत्य के कई अलग-अलग रूप प्रचलित थे, लेकिन वे समय-समय पर विकल्पों के साथ विकसित हुए। तंजौर के राजाओं ने कई कवियों, लेखकों, संगीतकारों और नर्तकों को संरक्षण दिया। इन नृत्य नाट्यों ने पौराणिक कथाओं के माध्यम से भक्ति के पहलू का प्रचार किया और आम लोगों को अच्छे नैतिक मूल्यों से भी अवगत कराया। इनमें से कुछ रचनाओं का उपयोग आज तक किया जाता है, लेकिन कई रचनाएँ अभी भी अछूती हैं और नृत्य में उनका प्रयोग नहीं किया गया है। भारतीय कला जगत के इतिहास में तंजौर के राजाओं का योगदान अद्वितीय है जिसके लिए कला जगत उनका ऋणी रहेगा।

कुंजी शब्द- तंजौर, नृत्य, चोला साम्राज्य

भारत का समृद्ध इतिहास भारतीय संस्कृति के बारे में बताता है कि हमारे पूर्वजों द्वारा उन्हें कैसे संरक्षित किया गया और पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ाया गया। नृत्य सबसे पुराने, सबसे व्यापक और लोकतांत्रिक कला रूपों में से एक है। प्राचीन काल से, मानव जाति के कई अवसर एक विशाल नृत्य प्रदर्शन के साथ होते हैं। प्राचीन काल में, नृत्य के कई अलग-अलग रूप प्रचलित थे, लेकिन वे समय-समय पर विकल्पों के साथ विकसित हुए।

नृत्य प्रदर्शन का प्रमाण प्रागैतिहासिक काल से मिलता है, जब गुफा चित्र अपने सरलतम रूप में कला की उपस्थिति का संकेत देते हैं। इसके अलावा, संगीत और आवाज के साथ आदिम नृत्य किया जाता था। भारत की स्वतंत्रता के बाद से, नृत्य पाठ्यक्रमों के माध्यम से आगे की शिक्षा, प्रशिक्षण और समाजीकरण के लिए कई स्कूल खोले गए हैं। भारत के प्रमुख शहरों में अब भरतनाट्यम, कथक, ओडिसी, कुचुपुडी, मोहिनीअट्टम, कथकली, सत्रिया और मणिपुरी जैसे नृत्य कक्षाओं का समाबेश करने वाले कई स्कूल हैं। शास्त्रीय भारतीय नृत्य के आधुनिक अभ्यास में कई नवाचार और विकास भारतीय स्वतंत्रता के बाद विकसित हुए हैं।

स्वतंत्रता के बाद से नृत्य के क्षेत्र में अनुसंधान कार्य को प्रमुख स्थान दिया गया है और कलाकार तथा विद्वान भारतीय सांस्कृतिक एकता की तर्कसंगत पहचान की अपनी भावना को बढ़ावा देने के लिए उत्सुक हो गए हैं। संगीत, नृत्य और चित्रकला में रुचि का पुनरुत्थान हुआ है। अगस्त 2021 को इंडियन क्लासिकल डांसर्स एसोसिएशन द्वारा आयोजित ऑनलाइन 28बुक लॉन्च की गई जिसमें डॉ कलारानी रामचंद्रन की बातचीत और इस तरह के एक उदार काम को संकलित करने के लिए किए गए उनके प्रयास वास्तव में कला समुदाय के लिए एक महत्वपूर्ण योगदान है इसका उल्लेख किया गया। तंजौर के नृत्य नाट्य पर आधारित इस शोध पुस्तक प्रकाशन के विशेष पहलु इस प्रकार हैं।

नृत्त, नृत्य और नाट्य यह तीन प्रमुख पहलू वैदिक काल से प्रचलित रहे हैं और नाट्यशास्त्र ग्रंथ से हमें पता चलता है कि नाट्य संगीत, नृत्य और नाटक का संयोजन है।

यह शोध कार्य तंजौर के राजाओं की नृत्य नाटिकाओं का संकलन है। इसमें उल्लेख किया गया है कि कैसे तंजौर राजवंशों ने भविष्य की पीढ़ी के लिए कलाओं का पोषण, योगदान, संरक्षण और संरक्षण किया है।

Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 10, Issue 01, January-June 2023
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2023

चोला साम्राज्य :

संगीत, नृत्य और रंगमंच के विकास के लिए राजाओं द्वारा प्रदान किया गया समर्थन वास्तव में .ई 850 से .ई 1280 तक सराहनीय है। राजाओं ने कला के फलने फूलने के लिए कई सुंदर मंदिरों का निर्माण किया और इसलिए यह-संगीत ,नृत्य और साहित्य के क्षेत्र में एक गौरवशाली काल था।

तंजौर नायक :

ई. से मेलातुर गाँव के कलाकार यक्षगानम 1500, भागवत मेला, कुरावंजी, हरिकथा और अन्य कई नृत्य नाटकों के निर्माण के लिए प्रसिद्ध हुए। इस अवधि के दौरान नर्तकियों और कलाकारों को एक उच्चली स्तर का प्रतीक दिया गया था और गुरुकुल प्रणा-की एक सख्त मौखिक परंपरा का अभ्यास किया गया था।

मराठा वंश :

मराठा राजाओं के शासनकाल ने .ई 1675 से .ई 1855 तक नृत्य और नृत्य नाटकों में कईं अनूठी रचनाओं को जन्म दिया। मीनाक्षी कल्याणम, स्वरजति, नल और प्रहलाद चरित्रम, दरु, पदम जैसे प्रमुख नृत्य नाटक श्रृंगार और भक्ति रस पर आधारित हैं। हिंदुस्तानी संगीत के तराना से प्रभावित होकर तिल्लाना एक नई कृति अस्तित्व में आई। इस अवधि के दौरान नर्तकियों, संगीतकारों और विद्वानों को सम्मानित किया गया। सरस्वती महल पुस्तकालय की स्थापना राजाओं के कार्यों, पुस्तकों के संग्रह, ताड़ के पत्तों की पांडुलिपियों की सुरक्षा के लिए की गई थी और अब यह सदियों पुरानी रचनाओं के लिए एक अभिलेखीय स्थान है।

चोला राज के दौरान तमिल साहित्य और रचनाओं का विकास, सांस्कृतिक साम्राज्य को मजबूत करना और नायक काल में रचनाओं की अधिकता ने नई भाषा तेलुगु में रचनाओं को जन्म दिया। इसके बाद मराठा शासन के दौरान विशेषज्ञों की टीम ने हमें भाषा की बाधाओं को तोड़ते हुए संगीत, नृत्य और नाटक के लिए मराठी भाषा का भी एक वैज्ञानिक आधार दिया है।

तंजौर राजाओं की कुछ प्रमुख एवं विलक्षण रचनाएं तथा उसके प्रकार इस प्रकार हैंI

- .प्रबन्धम -दत्त, पाड़ा, बिरुडा, पाटा, टाटा, टेनेका
- दारुविघ्नेश्वर - , श्रृंगार, अभिनय, लीला
- निरुपन सोल्लुकट्टस के माध्यम से - शब्द .
- .तोडायमंगलम भजन सम्प्रदाय गीत -
- दरू उल -, वेलि, संवाद, कैवारा, शरणु, सलाम, जक्किनी
- पदम - मधुराभक्ति थिरुप्पवई -, थिरुवसगम, दिव्यप्रबंधम, तिरुकोवै

जिसमें निम्न रचनाकारों के पदम् प्रख्यात हैं।

- अन्नमाचार्य पदम
- नायक चौ -, दरू, मदन, गुरु, नवा, पदचली
- गनमसेनया पदम

Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 10, Issue 01, January-June 2023
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2023

- क्षेत्रय पदम मुववगोपल्ला -
- मुथुटांडवरनटराज पदम -
- राजा शाहजी त्यागेश पदम -, मराठी में श्रृंगार पदम -रसिककर्णामृतम्
- नंदीपाददेवता की स्तुति -
- चूर्णिका -चार लिन गाने रागम और तालम पर बिठाए जाते हैं।
- प्रबंधकर्ण -, नृत्त

- तिल्लानातराना - से उत्पन्न
- शोभनम राजा की स्तुति पर गीत -
- कौटा संगत के लिए किया जाता है -
- मंगलम –नृत्य का अंत

मराठा राजा शाहजी द्वितीय)17वीं शताब्दीसनकाल के दौरान कई नृत्य नाटकों की रचना की गई थीके शा (, जिसमें बहुत सारी काव्य रचनाएँ जुड़ी हुई थीं जैसे

१. भूलोक देवेंद्र विलासम -जिसमें ४७ दरुओं वाले मन्मथ पर काल्पनिक नाटक थे।

२. चंद्रिकाहासाई विलासम –जिसमें ३० दरुओं वाले राजा शाहजी पर काल्पनिक नाटक थे।

३. विष्णु सहराजा विलासम नायक - के रूप में महाविष्णु और राजा शाहजी पर नाटक, जिसमें ३३ दरू हैं।

४. कावेरी कल्याणम समुद्रराजन के साथ कावेरी के विवाह पर नाटक - लिखा गया था।

मराठा राजा शाहजी ने मराठी में भी नृत्य नाट्य की रचना की है जो इस प्रकार हैं।

१. लक्ष्मीनारायण कल्याणम

२. गंगाकावेरी संवादम

३. लक्ष्मी बूदेवी संवादम

४. हरिहर विलासम

५. मार्कंडेय चरित्रम

६. त्यागराज विलासम

७. त्यागराजविनोद चित्रप्रबंधम

८. सुभद्रा कल्याणम

Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 10, Issue 01, January-June 2023
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2023

मराठी विद्वान राम पंडितार ने राजा एकोजी द्वितीय, प्रताप सिंह और तुलजा द्वितीय के दरबार में ढेर सारे नृत्य नाटकों की रचना की। उनमें से कुछ प्रसिद्ध नृत्य नाट्य इस प्रकार हैं।

१. मृत्युंजय सिरांजीवी नाटकम्

२. श्री कमलाम्बा त्यागेश परिनयम

३. शकुंतला नाटकम

४. राजकन्या परिणायम

५. पार्वती परिणयम्

ये तंजौर नृत्य नाट्य जो राजाओं के दरबारों में रचे गए वो आज ,२१ वीं शताब्दी में भी प्रदर्शित किए जाते हैं।

इनके उपरांत और भी कई रचनाएँ बनाई गई जैसे की भगवतमेला नाटक ,यक्षगान, कुरवंजी पर तमिल प्रबंध,गेया नाटक ,शंकर पल्लकी सेवा प्रबन्धम ,पंचरत्न प्रबन्धम ,त्यागराज विनोद चरित्र प्रबन्धम ,शंकरकालिनता संवाद नाटकम ,श्री कृष्ण लीला तरंगिणी ,रामनाटकम् , निरुपण ,गीथम इत्यादि।

कुरवंजी, यक्षगान, भगवतमेला नाटक और अधिकांश नृत्य नाट्य नाट्यशास्त्र में वर्णित व्याकरण और प्रारूप का पालन करते हैं। तंजौर ने तमिल, तेलुगु, मराठी और संस्कृत की चार भाषाओं में नृत्य नाटकों के माध्यम से कई कलात्मक प्रस्तुतियों का निर्माण किया है। तंजौर के राजाओं ने कई कवियों, लेखकों, संगीतकारों और नर्तकों को संरक्षण दिया। इन नृत्य नाट्यों ने पौराणिक कथाओं के माध्यम से भक्ति के पहलू का प्रचार किया और आम लोगों को अच्छे नैतिक मूल्यों से भी अवगत कराया। इनमें से कुछ रचनाओं का उपयोग आज तक किया जाता है, लेकिन कई रचनाएँ अभी भी अछूती हैं और नृत्य में उनका प्रयोग नहीं किया गया है। भारतीय कला जगत के इतिहास में तंजौर के राजाओं का योगदान अद्वितीय है जिसके लिए कला जगत उनका ऋणी रहेगा।

संदर्भ

Dance Dramas of Tanjore (A.D. 16th -19th century) by Dr.Kalarani Ramachandran
The Sanskritized Body. Dance Research Journal
The Sanskritized Body Published online by Cambridge University Press: 22 July 2014
Designing a dance curriculum for liberal education students: problems and resolutions towards holistic learning by Suparna Banerjee